जुलाई 2025, अंक 07, वर्ष -02

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन
अजय ब्रह्मात्मज

गुरु दत्त जन्मशती

अजय रोहिल्ला, अमिताभ श्रीवास्तव, आरती ठाकुर, गुरु दत्त, दिलीप कुमार पाठक, दीप भट्ट, नबेंदु घोष, नीरा जलक्षत्रि, डॉ रक्षा गीता, पवन झा, फ़रीद ख़ाँ, बलराज साहनी, संजीव गुप्त, संजीव श्रीवास्तव, सौम्या बैजल, सूर्यन मौर्य, यतीन्द्र मिश्र, यासिर उस्मान, युनूस ख़ान, विनोद नागर, हितेन्द्र पटेल

आवरण: आर वर्क

cinemahaul

जुलाई 2025

वर्ष 02 अंक 07

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: गुरु दत्त जन्मशती

कवर : रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 6

गुरु दत्त : पर्दे की कविता, आत्मा का विद्रोह 11

अजय रोहिल्ला

गुरु दत्त : एक अमर फिल्मकार की संवेदनशील सिनेमाई विरासत 22

अमिताभ श्रीवास्तव

गुरु दत्त होने के मायने 31

आरती ठाकुर

क्लासिक्स और कैश 36

गुरु दत्त

गुरु दत्त-मधुबाला की कॉमिक जुगलबंदी: मिस्टर एंड मिसेज़ 55 45

दिलीप कुमार पाठक

ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है 52

दीप भट्ट

मेरा दोस्त गुरु दत्त 60

नबेंदु घोष

साहब, बीवी और गुलाम: टूटते सामन्ती ढांचे के बीच एक स्त्री के विद्रोह की कथा 104

नीरा जलक्षत्रि

गुरु दत्त के फ्रेम में स्त्रियाँ : करुणा का मूक विद्रोह 119

डॉ रक्षा गीता

गुरु दत्त का त्रिकोण 124

फ़रीद ख़ाँ

गुरु दत्त की आँख : वी के मूर्ति [संदर्भ : गुरु दत्त के 100 साल] 129

पवन झा

गुरु दत्त के बारे में बलराज सहनी 139

काग़ज़ के फूल : आस्वाद का आह्लाद 146

संजीव गुप्त

‘प्यासा’ आज भी प्रासंगिक 157

संजीव श्रीवास्तव

गुरु दत्त - इंसान को इंसान समझना 169

सौम्य बैजल

गुरु दत्त की तन्हाई का स्थापत्य: 'कागज़ के फूल' 177

सूर्यंन मौर्य

गुरु दत्त की सांगीतिक समझ: 'चौदहवीं का चाँद' फ़िल्म के बहाने... 190

यतीन्द्र मिश्र

गुरु दत्त : एक अधूरी दास्तान 202

यासिर उस्मान

तंग आ चुके हैं कशमकश-ए-ज़िंदगी से हम 216

यूनुस ख़ान

क्या गुरूदत्त का सिनेमा सिर्फ बुद्धिजीवियों के लिये है? 226

विनोद नागर

गुरु दत्त 232

हितेन्द्र पटेल

गुरु दत्त की अधूरी फिल्में 242

अजय ब्रह्मात्मज

गुरु दत्त के शागिर्द और सहायक 246

अजय ब्रह्मात्मज

मैं जीवन से असंतुष्ट नहीं हूं

मैं स्वयं से असंतुष्ट हूं

गुरु दत्त

मेरी बात

पिछले 83-84 सालों में हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अनेक गणमान्य निर्देशक रहे हैं, जिन्होंने अपनी शैली और शिल्प से दर्शकों और समीक्षकों को प्रभावित किया है। उनकी फिल्मों ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में बहुत कुछ नया जोड़ा है और बदलाव लाया है। ऐसे निर्देशकों में अग्रणी हस्ताक्षर हैं गुरु दत्त। गुरु दत्त आज की पीढ़ी के लिए रहस्यमूर्ति हैं। पिछली सदी के पांचवें-छठे दशक के निर्देशकों में उनकी खास चर्चा होती है। उनकी 'प्यासा' और 'कागज के फूल' ऐसी फिल्में हैं, जो कलात्मक ऊंचाई हासिल करने के साथ कथ्य और शिल्प के लिहाज से भी उल्लेखनीय हैं। सिनेमा के छात्रों को ये दोनों फिल्में पढ़ाई जाती हैं। इन फिल्मों की परतदार प्रतिष्ठा है। हर श्रेष्ठ फिल्म की तरह गुरु दत्त की इन दोनों फिल्मों को देखते हुए हर बार किसी न किसी नए आयाम और निहितार्थ से परिचय होता है।

बिमल मित्र की पुस्तक 'बिछड़े सभी बारी-बारी', यासिर उस्मान की पुस्तक 'गुरुदत्त : एक अधूरी दास्तान', नसरीन मुन्नी कबीर की पुस्तक 'गुरुदत्त : ए लाइफ इन सिनेमा', अरुण खोपकर की पुस्तक 'गुरुदत्त: तीन अंकीय त्रासदी' सत्या शरण की पुस्तक '10 इयर्स विद गुरु दत्त: अबरार अल्वी'ज जर्नी', ललिता जगतियानी की पुस्तक 'थैंक्यू गुरु दत्त', फिरोज रंगूनवाला की पुस्तक 'गुरु दत्त' वसंती पादुकोण की

पुस्तक 'माय सन गुरु दत्त' आदि में गुरु दत्त के व्यक्तित्व और फिल्मों की चर्चा की गई है। फिर भी गुरु दत्त एक अनसुलझी पहेली की तरह हमारे बीच मौजूद हैं। मैंने उनकी मां की पुस्तक नहीं पढ़ी है। हो सकता है उन्होंने अपने बेटे के मर्म को समझा हो और मां की नजर से समाप्त होती/हुई जिंदगी का आकलन किया हो। गुरु दत्त को उनकी जटिलताओं, ग्रंथियों और आपद संवेदनाओं के साथ समझने में बिमल मित्र की पुस्तक एक सीमा तक कुंजी देती है। हम उनकी जिंदगी के कुछ दरवाजे और खिड़कियां खोल कर सिर्फ झांक पाते हैं। गुरु दत्त के अंतस और मानस के गह्वर तक बिमल मित्र भी नहीं जा पाते। हां, वे संकेत अवश्य देते हैं। वे गुरु दत्त को कठघरे में भी ले आते हैं। 'बिछड़े सभी बारी-बारी' पढ़ते हुए एक विरोधाभासी और द्वंद्वात्मक व्यक्तित्व उभरता है। वह सृजन की दुनिया में नवोन्मेषी है, लेकिन व्यक्तिगत जिंदगी में पत्नी के प्रति पुरातनपंथी है। अपने 'म्यूज' से उनके असीमित लगाव की कल्पना की जा सकती है, लेकिन पूर्व प्रेमिका और बाद में पत्नी बनी गीता दत्त की गायन प्रतिभा के प्रति वे स्वार्थवश संकुचित और आम पुरुषों की तरह प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं। जीवन में वे गीता दत्त को अपनी फिल्मों की स्त्रियों की तरह मुखर नहीं रहने देते। पुरुष प्रधान समाज में आमतौर पर स्त्रियों के प्रतिभा दबाई और कुचली जाती है। उसे दोयम महत्व दिया जाता है। वहीदा रहमान को लेकर गीता दत्त के मन में उपजी ईर्ष्या, ग्रंथि और असुरक्षा को मनोगत और अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता। दो प्रतिभाएं

आपस में बातचीत और समझदारी से इन्हें सुलझा सकती थीं, लेकिन शायद दांपत्य की इन गिरहों को खोलने और सुलझाने में दोनों की रुचि नहीं थी। यह भी हो सकता है कि आरंभिक परस्पर उदासीनता और उपेक्षा के कारण ये गिरहें इतनी मजबूत हो गयीं कि बगैर तीसरे की मदद के उन्हें खोलना मुश्किल हो गया हो। और हम पाते हैं कि उनके पास कोई तीसरा ऐसा नहीं था, जो दोनों से समान भावनात्मक स्नेह रखता हो। दोनों का शुभेक्षु हो।

10 अक्टूबर 1964 को गुरु दत्त ने नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या की। उनकी मृत्यु के बाद पत्र-पत्रिकाओं में खबरें आई होंगी। श्रद्धांजलियां भी लिखी गई होंगी। मेरी जिज्ञासा है कि 1964 के बाद उन्हें फिल्म इंडस्ट्री और दर्शकों ने कैसे और किस रूप में याद किया या फिर भूलने में माहिर समाज ने उन्हें भुला दिया औरों की तरह।

इस अंक की तैयारी और विभिन्न स्रोतों से मिली सामग्रियों के अध्ययन का यह सार निकलता है कि 1975 में फ्रांसीसी लेखक और क्रिटिक हेनरी मिसओलो के 55 पृष्ठीय आलेख के बाद गुरु दत्त के योगदान को इंटरनेशनल महत्व मिला। भारत में भी कदर बढ़ी। गुरु दत्त की फिल्में देखकर उसमें निहित सौंदर्य शास्त्र और फिल्म विधि का उन्होंने गहन विभीषण किया। उनके इस आलेख से फिल्मों के सुधि दर्शकों का ध्यान गुरु दत्त की ओर गया। लगभग 11 सालों की गुमनामी के बाद वे नई रौशनी में उभरे।

फिर 1989 में नसरीन मुन्नी कबीर की 84 मिनट की डॉक्यूमेंट्री 'इन सर्च ऑफ गुरु दत्त' ने गुरु दत्त को वह गरिमा और प्रतिष्ठा दी, जो आज विस्तृत होकर सिनेप्रेमियों के बीच पहुंची है। अब इतनी दोषरहित चर्चा हो रही है कि उन्हें निर्देशकों और फिल्मकारों में देवतुल्य समझा जाने लगा है। मानो उनमें कोई कमी या खामी नहीं हो। अतिशय श्रद्धा के इस गुणगान में 'साहब बीवी और गुलाम' फिल्म को 'प्यासा' और 'कागज के फूल' के साथ जोड़कर उनकी त्रयी की चर्चा की जाती है। इन चर्चाओं और विवेचनाओं में उनकी कमजोर फिल्मों को छोड़ दिया जाता है।

मुझे लगता है कि 21वीं सदी में उनका पुनः मूल्यांकन होना चाहिए। उनके प्रति अपेक्षित आदर रखते हुए उनकी फिल्मोग्राफी का समग्र अध्ययन, आकलन और विश्लेषण होना चाहिए। भारतीय समाज में अकाल मृत्यु(भले ही वह आत्महत्या हो) के बाद संबंधित व्यक्ति को विशिष्ट और आलोचना से परे मान लिया जाता है। मुझे अभी तक केवल एक फिल्मकार ऐसे मिले, जिनके विचार से उदासी और अवसाद के फिल्मकार गुरु दत्त श्रेष्ठ फिल्मकार नहीं है। उनकी अतिरेकी तारीफ होती है।

इस अंक को इकबाल मसूद के लेख के सहारे और मजबूत किया जा सकता था। कुछ किताबें भी पढ़नी रह गई। दरअसल, सिनेमाहौल फ़िल्म ईजीन के हर अंक के संयोजन और संपादन के लिए समय की कमी हो जाती है। इस कमी के बावजूद